E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

वेणीसंहार का नामकरण

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

महाकवि भट्टनारायण ने अपने इस (वेणीसंहार) नाटक का नाम अतीव आकर्षक एवं प्रभावोत्पादक रखा है। वस्तुतः यह नाम नाटक के प्रयोजन के सर्वथा अनुकूल है। इस नाटक की कथा का केन्द्र बिन्दु द्रौपदी की चोटी को संवारने की घटना का चित्रण करना है। यही इस नाटक का प्राण है, अतः वेणी को संवारना ही इस नाटक का प्रमुख प्रयोजन है। कवि ने इस नाटक का जो नामकरण किया वह नाम संबंधा नाटक के मुख्य प्रयोजन की सार्थकता एवं सफलता का निदर्शन है। "वेणीसंहार" शब्द की व्युत्पत्ति निम्न प्रकार समझनी चाहिए-

"वेण्या (हेतुना) संहारः (कौरवाणाम्) वेणीसंहारः प्रतिपाद्यः विषयोऽस्य नाटकस्य अथवा वेण्याः दुःशासनेन स्पृष्टायाः संहारः- संयमनं कृतं मोमेन तदत्र वर्णितम्"।

इसका आशय यह है कि दुर्योधन की सभा में द्रोपदी के केशपाश खुलने के कारण तथा घसीटने आदि के कारण कौरवों का विनाश हुआ। दुर्योधन की आज्ञा से दुःशासन ने द्रौपदी के केशों को राजसभा में पकड़कर घसीटा जिसके कारण वेणी खुल गई। उस खुली हुई वेणी का भीमसेन ने दुर्योधन आदि का वध किये जाने के पश्चात् दुर्योधन के रक्त से लिप्त हाथों से पुनः संहार किया। इस घटना का इस नाटक में वर्णन किया गया है, इसीलिये इस नाटक का नाम कवि ने "वेणीसंहार" रखा है।

प्रो० एम० आर० काले ने इस नाटक के नामकरण के सम्बन्ध में तीन अर्थों की कल्पना करते हुए कहा है कि-(१) वेण्याः संहारः (संहरणम्), (२) वेण्याः हेतुभूतया संहारः, (३) वेण्याः संहारः अर्थात् वेणी के कारण दुर्योधन आदि कौरवों का संहार या विनाश या चोटी रूप कारण से दुर्योधन आदि का संहार या वेणी का संहार या वेणी का संवारना प्रतीत होता है।

वेणीसंहार नाटक वीर रस प्रधान है। इस नाटक के अन्तर्गत नाटककार ने महाभारत की कथा को मौलिकता एवं नूतनता के साथ चित्रित किया है। नाटक की कथा में दुर्योधन को कुटिल हृदय दिखलाया गया है। अतः कुटिल हृदय दुर्योधन, पाण्डवों की साधु मनोवृत्ति का अनुचित लाभ उठाकर पाण्डवों के राज्य को हड़पने का दुःसाहस एवं दुश्चेष्टा करता है। यही कारण है कि दुर्योधन ने पाण्डवों को द्यूत क्रीड़ा में अपने मामा शकुनि की सहायता से हराकर लांछित किया और दुर्योधन की आज्ञा से दुःशासन ने द्रौपदी का राजसभा में अपमान किया। दुर्योधन के इन अमानवीय व्यवहारों के कारण साहसी एवं वीर भीमसेन के हृदय में प्रतिहिंसा की भावना भड़क उठी। दुर्योधन के प्रति भीम के हृदय में प्रतिशोध की भावना ही वेणीसंहार नाटक का मूल स्रोत है। कवि ने इसी वृत्तान्त को नाटकीयता के परिवेश में परिवर्तित करके इस प्रकार चित्रित किया है जिससे यह नाटक मौलिकता एवं नूतनता के साथ सामाजिकों के समक्ष उपस्थित होता है। दुःशासन दुर्योधन की आज्ञा से द्रौपदी के केशों को पकड़कर घसीटते हुए राजसभा में ले आता है और चीरहरण के द्वारा उसे अपमानित करता है जिससे द्रौपदी की वेणी खुल जाती है। द्रौपदी उसी स्थल पर प्रतिज्ञा करती है कि जब तक इस अपमान का बदला नहीं लिया जायेगा तब तक मैं अपनी इस खुली हुई वेणी को नहीं संवारूगी। उसी समय भीमसेन भी प्रतिज्ञा करते हैं कि मैं अपने हाथों को दुर्योधन के रक्त में भिंगोकर तुम्हारी इस खुली हुई चोटी को बाधूंगा। जैसा कि अधोलिखित श्लोक में वर्णित है-

चज्चद् भुजभ्रमितचण्डगदाभिघाद् संचूर्णितोरुयुगलस्य सुयोधनस्य।
स्त्यानावनद्धधनशोणितशोणपाणिरुदत्तसंयिष्यति कचांस्तव देवि! भीमः।।

भीमसेन की यह प्रतिज्ञा इस नाटक का मूल केन्द्र है। जिस समय भीम को यह ज्ञात होता है कि श्रीकृष्ण पाँच गाँवों की सन्धि का प्रस्ताव लेकर दुर्योधन के पास गये हैं तब भीम का क्रोध भड़क उठता है, वह सहदेव से कहता है कि अब मैं युद्ध में कौरवों को नहीं मारूंगा, दुःशासन के हृदय का रक्तपान भी नहीं करूंगा और दुर्योधन का उरुभग भी नहीं करूंगा। आपके राजा युधिष्ठिर पाँच गाँव की शर्त से सन्धि कर लें। यहाँ काकु ध्वनि से यह व्यञ्जित होता है कि मैंने जो पूर्व प्रतिज्ञायें की है, मैं उनको अवश्य पूर्ण करूंगा चाहे यह सन्धि सफल हो या न हो जैसा कि भीम के शब्दों में देखिये–

मथ्नामि कौरवशतं समरे न कोपाद् दुःशासनस्य रुधिरं न पिबाम्युरस्तः।

संचूर्णयामि गदया न सुयोधनोरू सन्धिं करोतु भवतां नृपतिः पणेन।।

कौरवों के वंश का विनाश करने के उपरान्त नाटक के अन्त में भीमसेन दुर्योधन का वध करके तथा उसकी जङ्घा को तोड़कर उसके रक्तरंजित हाथों से द्रौपदी की वेणी संवारता है और अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करने में सफल होता है। कवि ने नेपथ्य के द्वारा भीम के द्वारा द्रौपदी की वेणी संवारने की सूचना सामाजिकों को देते हुए मंगल कामना की है।

इस प्रकार उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि प्रतिभावान् नाटककार ने अपने नाटक का नामकरण यथा नाम तथा गुण के अनुरूप ही रखा है जो प्रभावोत्पादक एवं मुख्य उद्देश्य को सफलता के साथ व्यक्त करने में पूर्ण समर्थ है। अतः "वेणीसंहार" यह नाम इस नाटक के विषय के अनुरूप एवम् उचित ही है।